आज की मुरली का सार ---------- Date: 02-07-2014

आज बाबा ने मुरली में हम बच्चों को कहा, इस कलयुगी संसार में दुख तो बहुत हैं, उसकी लिस्ट बनाओ. बाबा ने कहा, जब तुम यह सिद्ध कर बतायेंगे की ये संसार तो दुखो से भरा हुआ हैं, तो समझेंगे कि यह बात तो बिल्कुल ठीक हैं. यह अपार दुख तो सिवाय एक बाप के और कोई दूर कर नहीं सकते.

आज कि दुनिया में दुख तो बहुत हैं, हम मनुष्य के मुख्य दुखो कि लिस्ट बनाकर उसे सतयुग के सुख के साथ कमपेर करेंगे.

1. कलियुग में मनुष्य कि अकाले मृत्यु होती हैं. सतयुग में मनुष्य अपने समय पर, यानी पूरा जीवन, करीब 150 वर्ष कि आयु भोग कर शरीर छोड़ते हैं.

2. कलियुग में मनुष्य सतत अपने मृत्यु के भय से जीवन जीते हैं. सतयुग के मनुष्य अपने समय पर खुशी-खुशी जीवन त्याग करते हैं, उन्हें साक्षात्कार होता हैं कि अब में जाकर नया शरीर लूंगा, छोटा बच्चा बनूंगा.

3. कलियुग के मनुष्य को सबसे बडा दुख, शरीर के रोगों से होता हैं. यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के रोग हैं जो मनुष्य के जीवन को दुखी बना देते हैं. सतयुग में कोई भी रोग का नाम-निशान नहीं होता.

4. कलियुग में प्राकृतिक आपदाये भी मनुष्य को बहुत दुखी करती हैं. सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान हैं तो सबकुछ ऑडर प्रमाण चलता हैं.

5. कलियुग के मनुष्य काम-क्रोध-मोह-लोभ-अहंकार-ईर्षा-राग-द्वेष ऐसे बहुत प्रकार के विकारों से पीड़ित हैं और एक-दूसरे को दुःखी करते रहते हैं. सतयुग के मनुष्य निर्विकारी हैं और एक-दो में आत्मिक प्रेम भाव से और सुख-शांति से रहते हैं.

6. कलियुग के मनुष्य सबसे ज़्यादा गरीबी से पीडाते हैं, आज भी संसार में 80 प्रतिशत से भी ज्यादा आबादी गरीबी रेखा कि नीचे जीवन बिता रही हैं. सतयुग में सब मनुष्य सुखी रहते हैं.

7. कलियुग में मनुष्य के सर्व सम्बन्ध एक बन्धन जैसे होते हैं जो उसे दुख ही महसूस कराते हैं. सतयुग में मनुष्य के सर्व सम्बन्ध निर्बन्धन रहते हैं, इसलिए सर्व सम्बन्ध उसे सुख ही देते हैं.

8. कलियुग में मनुष्य को मच्छर, वाइरस और अन्य छोटे बड़े जीव-जन्तु या प्राणी भी ज्यादातर दुखी करते रहते हैं. सतयुग में मनुष्य को दुखी करने वाले जीव-जन्तु या प्राणी आदि नहीं होते.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email – a.brahmin.soul@gmail.com